डींकन, महिला–डींकन, छोटे समूहों के अगुवों तथा साप्ताहिक गतिविधियां चलाने वाले सेवकों से संबंधित निर्देशः

प्रारम्भ करना

प्रार्थनाः हे प्रभु, अपने अनुग्रह से हमारी कलीसिया को वर दे कि वह प्रारम्भिक कलीसियाओं की समान सामर्थ के साथ नई सेवकाईयों का विकास कर सके। हमें उन्हीं की भांति सेवा करने के योग्य बनाएं। आमीन।

प्रायः विश्वासीगण प्रति सप्ताह एक दूसरे की सेवा करने और साथ ही अन्य सदस्यों की सहायता के लिये एकत्रित होते हैं। वे लोगों के लिये प्रार्थना करते, शिष्य बनाते तथा नाना प्रकार की सेवकाईयों का संचालन करते हैं। कभी कभी वे समूहों में एकत्रित होते हैं। संभव है बड़े परिवार एक साथ जमा होते हों या दो तीन परिवार मिलकर परस्पर आराधना के लिये समूह बना लेते हों। ऐसी परिस्थिति में डींकन या डींकन–महिलाएं इन समूहों का संचालन करते हैं और सप्ताह में होने वाली गतिविधियों की देखभाल करते हैं। इन डींकनों द्वारा आवश्यकता में पड़े लोगों की सहायता की जाती है।

1. डींकनों व महिंला–डीकनों को नियुक्त कीजिये ताकि अवश्यकताग्रस्त लोगों की देखभाल हो सके तथा अन्य साप्ताहिक गतिविधियों में विश्वासियों को सहायता पहुंचाई जा सकेः

- डींकनों की नियुक्ति से संबंधित विशेषताओं के लिये देखें – १ तीमुथियुस ३:८–१३
- डींकनों के सिर पर हाथ रखें जैसाकि प्रेरितों ने रखा। पवित्रात्मा से उनके अभिषेक हेतु प्रार्थना करें।
- पता लगाएं कि कौन से विश्वासी अधिक आवश्यकता में हैं। अपनी कलीसिया से बाहर वालों के साथ भी ऐसा ही करें।
- यदि आवश्यकता हो तो विश्वासियों से दान देने, अपना समय देने, सहायता करने एवं अन्य किसी प्रकार की वस्तु देने का निवेदन करें ताकि उस आवश्यकता को पूरा किया जा सके।

येरूशलेम में डींकनों ने क्या किया था, यह जानने के लिये पढ़ें – प्रेरितों के काम ६:१–७

- वह कौन सी आवश्यकता थी जिसने डींकनों की नियुक्ति के लिये नई कलीसिया को उभारा?
- डींकनों की नियुक्ति के लिये क्या विशेषताएं देखी गई थीं ताकि विधवाओं की सुधि ली जा सके?
- पवित्रात्मा और बुद्धि से परिपूर्ण व्यक्ति को नियुक्त करने का क्या परिणाम होता है ? *(उत्तर पद 7)*
- रोमियों १६:१ से ज्ञात होता है कि फीबे नामक महिला डींकन थी।
- बाइबल में शब्द डींकन से तात्पर्य है कलीसिया का सेवक।

2. योजना बनाएं कि आप और आपके सहयोगी आगामी सप्ताह में कौन सा कार्य करेंगे :

नये चरवाहों से संबंधित अध्ययनमाला में उन विषयों का समावेश किया गया है जिन्हें साप्ताहिक आराधना सभा के मध्य सिखाना है। यह सहायता सामग्री आपको इस अध्ययनमाला के दूसरे भाग में मिलेगी।

प्रत्येक अध्ययन-पाठ में उन गतिविधियों की सूची दी गई है जिन्हें आप व आपके सहयोगी उपयोग में ला सकते हैं। ऐसी गतिविधियों का चुनाव कीजिये जो विश्वासीगणों की आवश्यकता के अनुकूल हों, अन्य गतिविधियों पर ध्यान न दीजिये।

मुख्य आराधना सभा से पर्याप्त समय पूर्व अपने सहयोगियों के साथ मिलकर इन गतिविधियों की योजना बनाएं ताकि आप उन्हें बता सकें कि उन्हें क्या कुछ करना होगा। अपनी योजनाएं लिख लें तथा अपनी कलीसिया के चरवाहे से योजनाओं के विषय में विचार-विमर्श करें।

जब अगले सप्ताह के लिये योजनाएं बनाने के लिये लोग एकत्रित होते हैं तब चरवाहे के साथ तथा अपनी कलीसिया के अन्य अगुवों के साथ मिलकर ये योजनाएं बनाईये। जब योजनाएं बन जाएं तो सभा में सूचना भी दीजिये। किस व्यक्ति को क्या करना है, इस पर भी विचार कीजिये व तठस्त रहिये। योजनाओं में निम्नलिखित गतिविधियाँ सम्मिलित की जा सकती हैं:-

- ख्रीस्त की देह अर्थात् कलीसिया में एक-दूसरे की सेवा करना जैसाकि वचन बताता है। (गलातियों ६:१०)
- परिवार की देखभाल करना जैसाकि वचन चेतावनी देता है - (इफिसियों ५:२१ से ६:१० तक)
- अन्य कलीसियाओं से सहयोग करना जैसा संत पौलुस ने किया - (प्रेरि० १५:४०-४१)
- जैसाकि प्रभु की आज्ञा है, अपने मित्रों, पड़ोसियों, शत्रुओं एवं समाज की सेवा करना - (मत्ती ५:१३-१४, २५:३१-४६)।
- दूसरों को सिखाना ताकि वे हमारे साथ मिलकर सेवा करने के योग्य बन सकें जैसाकि संत पौलुस ने अपने सहकर्मी तीमुथियुस को करने की आज्ञा दी थी -(२ तीमुथियुस २:२)
- आवश्यकतानुसार अन्य कार्यो की योजना बनाएं।